श्लोक नं॰ 41

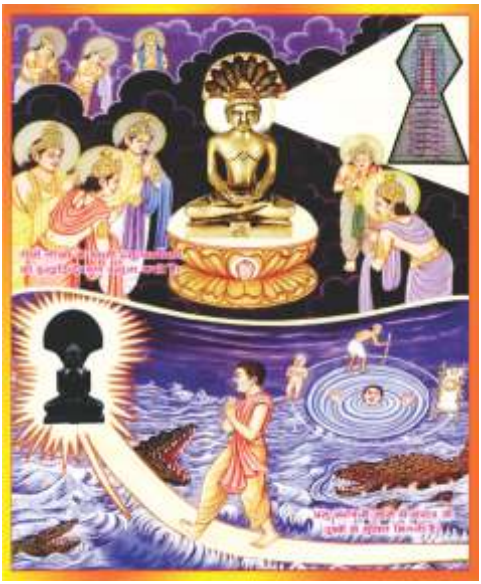

ईश वन्दना

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तुसार!
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा-हृद! मां पुनीहि
सीदन्तमद्य भयद - व्यसनाम्बुराशेः॥ 41॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

सर्व समर्थ जिनेश आप तत्त्वों के जाननहार।
दया सरोवर करुणासागर जग के तारणहार॥
दुख समुद्र में गिरा हुआ मैं तड़प रहा स्वामी।
मुझे बचालो भवसागर से हे अन्तर्यामी॥
कर्म कलंक रहित करके प्रभु निज सम मुझे करो।
भक्त आपका सच्चा हूँ मैं मुझ पर दया करो॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥41॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं।

मुनीशानमृतस्वादून्, सुधावत् स्वादुभोगिनः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 41॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चाल-शेर

1. **देवाधिदेव की करे जो भक्ति अर्चना।**
करते हैं देव भी स्वयं उनकी आराधना॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2241॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **देवेन्द्र औ मुनीन्द्र करें ध्यान आपका।**
सुमरन करूँ मैं भाव से जिनराज आपका॥ हे०॥ 2242॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वेन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **द्रव्यों की भरी थालियाँ तव-पद में ला रहे।**
कब आप सम बनेंगे भावना ये भा रहे॥ हे०॥ 2243॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **वन्द्यों से आप वन्द्य हैं पूज्यों से पूज्य भी।**
त्रिभुवन के श्रेष्ठ ज्येष्ठ भक्त पूजते सभी॥ हे०॥ 2244॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **उद्यत है गद्य पद्य में पूजन को सुर सभी।**
मैं अष्ट द्रव्य हाथ में ले पूजता अभी॥ हे०॥ 2245॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **विघ्नों का नाश होता है जिनवर के ध्यान से।**
होता है शुद्ध आतमा मोहादि त्याग से॥ हे०॥ 2246॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **दिवि मध्य औ पाताल लोक जानते प्रभो।**
त्रय लोक औ अलोक सर्व देखते विभो॥ हे०॥ 2247॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तारे समान भक्त नाथ चन्द्र सम तुम्हीं।
दिखते हो दिवस-रात नाथ आप आप ही॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2248॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. खिरते हैं दिव्यवचन प्रभु आपके मुख से।
सुनते हैं भव्य जीव अति हर्ष भाव से॥ हे०॥ 2249॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लघु भक्त की ये प्रार्थना स्वीकारिए प्रभो।
अपने ही मोक्षधाम में बुलाइए विभो॥ हे०॥ 2250॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वस्तु स्वरूप का सु-ज्ञान आपने दिया।
सुन भव्य जीव ने निजात्म ज्ञान पा लिया॥ हे०॥ 2251॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तुम ही हो नाथ मेरी श्वास धड़कनें तुम्हीं।
जिनराज बिन तुम्हारे भक्त कुछ भी तो नहीं॥ हे०॥ 2252॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. साधक बनूँ प्रभो मैं साधना ही नित करूँ।
जब तक मिले न साध्य मोक्षपथ पे ही चलूँ॥ हे०॥ 2253॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रति राग अरति द्वेष को प्रभु ने मिटा दिया।
निज आतमा से कर्म मैल को हटा दिया॥ हे०॥ 2254॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सन्मार्ग आपसे मिला उपकार नन्त हैं।
हो नाथ सर्वश्रेष्ठ आप मुक्तीकन्त हैं॥ हे०॥ 2255॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. साधन हैं आपके वचन शिवप्राप्ति में प्रभो।
पाऊँ मैं नन्त शान्ति सदा मुक्ती में विभो॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2256॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. रमणीय समवसरण की सभा सुखद लगी।
भव्यों की महा मोह नींद शीघ्र ही भगी॥ हे०॥ 2257॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तारक हो आप ही अहो भव-सिन्धु के जिनेश।
भवपार करके मोक्षमहल में करूँ प्रवेश॥ हे०॥ 2258॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रज मोह की उड़ा के आप मोहजित् हुए।
धर शुक्लध्यान नाथ आप शुद्ध हो गए॥ हे०॥ 2259॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कलशों को भर के क्षीरसिन्धु से किया न्हवन।
फिर देव-देवियों ने किया भक्ति से नमन॥ हे०॥ 2260॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. विपदा टली सुख सम्पदा पाई है भक्ति से।
श्रद्धालुओं का लक्ष्य बस जाना है मुक्ति में॥ हे०॥ 2261॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भोगों में लिप्त जो हुए भव-भव भटक गए।
भक्ति में हुए लीन जिन समान हो गए॥ हे०॥ 2262॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भुवनत्रयों में एक आप ही विशेष हैं।
रहते हो क्योंकि नाथ आप निज चिदेश में॥ हे०॥ 2263॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वक्ता न आपके समान कोई और है।
अतएव पूजते सभी होकर विभोर हैं॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2264॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नायक हो आप विश्व के ज्ञायक भी आप हो।
देवाधिदेव नाम के लायक भी आप हो॥ हे०॥ 2265॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धिक्कार है मुझे जो आत्महित नहीं किया।
श्रद्धा से एक बार भी जिन नाम ना लिया॥॥ हे०॥ 2266॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नागेन्द्र आपके चरण की वन्दना करे।
ले दिव्य अष्ट द्रव्य महा अर्चना करे॥ हे०॥ 2267॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. थल जल गगनपति सभी गुणगान कर रहे।
छवि देख वीतराग की आराधना करें॥ हे०॥ 2268॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्राता हो आप भव्य जीव के सदैव ही।
हम आपको न छोड़ कहीं जाएँगे नहीं॥ हे०॥ 2269॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. यतियों ने आत्म कक्ष में तुमको बसा लिया।
प्रभु आपने भी निज समान ही बना दिया॥ हे०॥ 2270॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. स्वर्णों के थाल रत्न मणि मोती से भरे।
धर हर्ष भाव उर में सुर आराधना करें॥ हे०॥ 2271॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. देवालयों में आपकी बहुमूर्तियाँ बसीं।
भक्तों के हृदयआलयों में है प्रभु छवि॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2272॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. वरदान से किसी के कोई मुक्त ना हुआ।
दे श्राप कोई तो भी जीव नर्क ना गया॥ हे०॥ 2273॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कर कर्म पर प्रहार आत्म शुद्ध कर लिया।
चिरकाल बाद आपने निजधाम पा लिया॥ हे०॥ 2274॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुचि ज्ञान चरित मिलकर मुक्ती का पन्थ है।
उद्धार करें जग का उपकारी सन्त हैं॥ हे०॥ 2275॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. णारक पशु नर सुरगति में कष्ट भोगता।
पंचम गति को पाने की मैं पाऊँ योग्यता॥ हे०॥ 2276॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हृदयेश पार्श्वदेव के चरण में नित नमूँ।
कर ध्यान आपके गुणों का दोष से बचूँ॥ हे०॥ 2277॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दस धर्म धार कर प्रभु जी सिद्ध हो गए।
कर स्नान स्वानुभूति जल से शुद्ध हो गए॥ हे०॥ 2278॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. माम् पाहि पार्श्वनाथ आपकी शरण पड़ा।
भक्ति से रचाने विधान आप दर खड़ा॥ हे०॥ 2279॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'माम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पुनरागमन न हो कभी जिनराज आपका।
जड़ मूल से ही नाश किया पाप ताप का॥ हे०॥ 2280॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नीरादि शुद्ध द्रव्य ले आराधना करूँ।
करिए प्रभु उपकार जगत-सिन्धु से तिरूँ॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2281॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हितकर हैं आपके वचन सु-भव्य जीव को।
हो भक्त अजर-अमर पिये ज्ञान नीर को॥ हे०॥ 2282॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सीधे गए हैं सिद्धक्षेत्र नन्तवीर्य से।
कैसे करूँ अब दर्श प्रभो अल्प ज्ञान से॥ हे०॥ 2283॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दन्ति[1] वृषभ मृगादि[2] आपका दरश करें।
सम्यक्त्व निधि पाय अति हर्ष को धरें॥ हे०॥ 2284॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तट पा लिया है आपने भवसिन्धु का प्रभो।
मुझको भी पार कीजिए शरण पड़ा विभो॥ हे०॥ 2285॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मधुरिम बजे सु-वाद्य मुरलियाँ भी गगन में।
जागो रे भव्य प्राणियों जिनदेव आ रहे॥ हे०॥ 2286॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. उद्यत है जो सदैव ही जिनभक्ति गान में।
बसते हैं पार्श्वनाथ जी उनके ही ज्ञान में॥ हे०॥ 2287॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भव-भव के दुःख कष्ट से भयभीत आत्मा।
प्रभु-भक्ति से सुना है भक्त हो जिनात्मा॥ हे०॥ 2288॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यति बन करूँ मैं यत्न शीघ्र मुक्ती में बसूँ।
इस मोह के भ्रम जाल में कभी नहीं फँसूं॥ हे०॥ 2289॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. हाथी 2. हिरण

50. दर्शन से भक्त के नयन न तृप्त हों कभी।
जिन-दर्श के बिना न आत्म-दर्श हो कभी॥
हे पार्श्वनाथ आपको निहारता रहूँ।
है भावना यही मैं नित्य पूजता रहूँ॥ 2290॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. व्यय ध्रौव्य औ उत्पाद हो प्रत्येक द्रव्य में।
'सत् द्रव्य लक्षणम्' कहा जिनेन्द्र देव ने॥ हे०॥ 2291॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सर्वज्ञ प्रभु तार दो भवसिन्धु से मुझे।
करके विमुक्त कर्म से निजसम करो मुझे॥ हे०॥ 2292॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नाम्नां हजार एक आठ से पुकारते।
वे भव्य जीव सर्व पाप शीघ्र नाशते॥ हे०॥ 2293॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. बुद्धि हो तीव्र आप ही के नाम जाप से।
होता है बुद्धिहीन व्यर्थ के प्रलाप से॥ हे०॥ 2294॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रागी हूँ आपके गुणों का आ गया शरण।
मम प्रार्थना प्रभु जी मेटिए जनम-मरण॥ हे०॥ 2295॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणराशेः प्रभु जी नन्त सौख्य पा गए।
इस भक्त आतमा को पार्श्वनाथ भा गए॥ हे०॥ 2296॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

तत्त्वज्ञ प्रभु तारते भव-सिन्धु से तुम्हीं।
दुष्कर्म के कलंक से बचा रहे तुम्हीं॥
श्रद्धा से मैं पूर्णार्घ्य को चढ़ा रहा विभो।
सच्चा हूँ भक्त आपका करिए दया प्रभो॥41॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 42

याचना की भक्ति

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणाम्
भक्तेःफलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक - शरणस्य शरण्य! भूयाः
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि॥ 42॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

भवकानन में एक अकेला भटक रहा स्वामी।
अशरण जग में मात्र आपकी शरण मुझे स्वामी॥
जो भी अब तक भक्ति का फल संचित हुआ प्रभो।
माँग रहा मैं केवल इतना देना मुझे विभो॥
मोक्ष प्राप्ति तक तुम ही मेरे स्वामी रहना नाथ।
तुम ही मेरे सब कुछ भगवन् पल-पल देना साथ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 42॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं।

अक्षीणर्द्धिपरिप्राप्तान् , दात्राहार प्रवर्धकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 42॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

घत्ता

1. यति ऋषि मुनि नमते, चिन्तन करते, तीन योग से ध्याते हैं।
प्रभु त्रिभुवन ज्ञायक, भविजन पालक, भक्त पूजने आते हैं॥ 2297॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. उद्यम करना है, शिव वरना है, इसी भाव से आया हूँ।
नहीं दिव्य द्रव्य है, प्रभु अगम्य हैं, उर में श्रद्धा लाया हूँ॥ 2298॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अस्तित्वादिक गुण, जानन की धुन, भक्त हृदय में जाग गई।
प्रभु सन्निधि पाकर, अति हर्षाकर, भोगों से रुचि भाग गई॥ 2299॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नायक हो जग के, मेरे मन के, मालिक भी प्रभु तुम ही हो।
सब झूठे नाते, सुख में आते, सच्चे साथी तुम ही हो॥ 2300॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. थक गया भक्त है, अति अशक्त है, नहीं अकेला चल सकता।
प्रभु राह दिखा दो, बाँह थाम लो, भक्त अरज तुमसे करता॥ 2301॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भक्ति की शक्ती, देती मुक्ती, गुरुवर ऐसा कहते हैं।
जो भी गुण गाते, पुण्य कमाते, शीघ्र मुक्ती वे वरते हैं ॥ 2302॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वस्त्राभूषण तज, प्रभु गुण को भज, निज शुद्धातम प्रकटाया।
प्रभु पन्थ चलू मैं, ध्यान धरूँ मैं, यही भाव उर में लाया॥ 2303॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दर्शन तव पाकर, हर्ष धारकर, कर्म शृंखला टूट रही।
ऐसा ही लगता, मन यह कहता, भव की बाधा छूट रही॥ 2304॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जिन अङ्घ्रि द्वयं को, मम वन्दन हो, कर्मों के बन्धन क्षय हो।
पल-पल मैं ध्याऊँ, रटन लगाऊँ, पार्श्वप्रभु की जय-जय हो॥ 2305॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्घ्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. सम्यक् रत्नत्रय, करे कर्मक्षय, नाथ आपने बतलाया।
मैं शिवपथ पाऊँ, कर्म नशाऊँ, अतः अर्चना को आया॥ 2306॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. रोमांचित होकर, जिन-अर्चा कर, मुझको अद्भुत शान्ति मिली।
मम सफल हुआ भव, प्रभु पाकर अब, मुरझाई सुख कली खिली॥ 2307॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. रुचि हो स्वातम की,परमातम की,पल-पल ही धुन लग जाए।
प्रभु को उर धारूँ, स्वात्म विचारूँ, मोह नींद ही भग जाए॥ 2308॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. हा-हा मैं दुखिया, प्रभु अति सुखिया, दुःख नाशने आया हूँ।
प्रभु की मानूँगा, नित पूजूँगा, प्रभु को ध्याने आया हूँ॥ 2309॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. सुर नृणां पूज्य हो, जगतवन्द्य हो, श्रेष्ठ ना तुम-सा है कोई।
अतएव द्वार पर, आया जिनवर, मीत आपसा कोई नहीं॥ 2310॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भक्तों के स्वामी, हे ध्रुवधामी, मुझको शिवमग दिखला दो।
निज को मैं भूला, पथ प्रतिकूला, मिलन स्वयं से करवा दो॥ 2311॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मुक्तेः निधि पाई, हे जिनराई, हृदय कटोरा भर देना।
मैं हूँ अति निर्धन, बिना ज्ञान धन, विज्ञ आप सम कर लेना॥ 2312॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. फण को फैलाया,अहिपति आया,पार्श्वप्रभु का दर्श किया।
सिर झुका-झुका कर, प्रभु को ध्याकर, समकित का शुभ अमिय पिया॥ 2313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लंकापति हारा, धर्म ने तारा, धर्मी रामप्रभु जीते।
जो सत्पथ चलते, प्रभु को नमते, भव्य भक्त दुख से रीते॥ 2314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कितने भवि तारे, प्रभो सहारे, सिद्धक्षेत्र में पहुँच गए।
अब मेरी बारी, हे जिनरायी, कैसे तुम बिन भक्त रहे॥ 2315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मणि रत्न न चाहूँ, मुक्ती मांगूँ, राग-द्वेष ही मिट जाए।
सब विकार नाशी, प्रभु अविनाशी, अक्षय शिवपद मिल जाए॥ 2316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पितु मात हमारे, हो रखवाले, पार्श्वप्रभु मम पालक हो।
प्रभु परम वीर हो, धरम धीर हो, सर्व विश्व के ज्ञायक हो॥ 2317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सन्देह करे ना, सुन प्रभु वचना, वह सद्भक्त कहाता है।
संयम के रथ पर, सवार होकर, शिवसुख धाम पहुँचता है॥ 2318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तद्भव शिवगामी, पार्श्व सु-नामी, कभी न जग में आएँगे।
रत्नत्रय धरकर, जिनपथ चलकर, भव्य परम पद पाएँगे॥ 2319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तमनाशक वाणी, जग कल्याणी, स्व-पर भेद बतलाती है।
भव दुख से बचकर, कर्म हरण कर, मोक्षमहल ले जाती है॥ 2320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सञ्चय ना करना, जड़ धन तजना, साथ न कुछ भी जाना है।
यह कहा प्रभु ने, धरो हृदय में, यदि अक्षय सुख पाना है॥ 2321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सञ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. किञ्चित् से चिन्तित, सुख ना किञ्चित्, परिग्रह से दुख पाता है।
जो संग[1] छोड़ता, मोह तोड़ता, वह सिद्धालय पाता है॥ 2322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तात्कालिक सुख है, भावी दुख है, ऐसा इन्द्रिय सुख तजना।
प्रभुवर का कहना, निज में रमना, अक्षय आत्मिक सुख पाना॥ 2323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. भव्याः नमते हैं, नित जपते हैं, पार्श्व नाम की माला को।
प्रभु का सुमरन कर, धरते हैं उर, तीर्थङ्कर जिनराया को॥ 2324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तन्मय होकर के, मन थिर करके, निजानुभव जो करते हैं।
चिन्मय चिदेश में, मुनी भेष में, शिवललना को वरते हैं॥ 2325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मेरे मन मन्दिर, आओ जिनवर, भक्त आपको बुला रहा।
जिसने भी ध्याया, तुमको पाया, सारे जग को भुला दिया॥ 2326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. त्वम् जिनवर शरणं, भवदुख हरणं, शिवसुख कारण हो स्वामी।
अब भक्त बना लो, पास बुला लो, पार्श्वप्रभु प्रिय जगनामी॥ 2327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. दे दो प्रभु शक्ति, पाऊँ मुक्ती, और नहीं कुछ भी चाहूँ।
प्रभु तुम-सा बनना, दुख से बचना, शाश्वत शिवसुख ही मांगूँ॥ 2328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. परिग्रह

33. कलशा कर में ले, सुरपति बोले, बालप्रभु का न्हवन करूँ।
सब विधिमल धोऊँ, जिनसम हो लूँ, मुक्तीरमा को शीघ्र वरूँ॥ 2329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शत-शत वन्दन है, अभिनन्दन है, पूजन का सौभाग्य जगा।
कई जन्म-जन्म के, पुण्य उदय से, प्रभु मिले यह मुझे लगा॥ 2330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रग-रग में बसते, कल्मष कटते, ऐसा अनुभव करता हूँ।
प्रभु बिन क्या जीवन, अर्पण तन-मन, सर्व समर्पण करता हूँ॥ 2331॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. गुण नन्त भरे हैं, दोष झरे हैं, सिद्धक्षेत्र के हो स्वामी।
पारस जिन स्वामी, हे सुखधामी, मैं भी तव पद अभिलाषी॥ 2332॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. आलस्य मिटाकर, संयम पाकर, मोक्षमहल में बसना है।
जो किया आपने, कहा आपने, मुझको भी वह करना है॥ 2333॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शशि से भी उज्ज्वल,हो अति निर्मल,पार्श्वप्रभु गुणसागर हो।
मिथ्यातम हारी, जग हितकारी, केवलज्ञान दिवाकर हो॥ 2334॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रसना रटती है, प्रभु जपती है, नाम अति प्यारा लगता।
उपयोग आपमें, तजूँ पाप मैं, यही भाव मेरा रहता॥ 2335॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पुण्यादिक क्षयकर, स्वातम लखकर, परमातम पद पाया है।
आकुलता तजने, निज में रमने, भक्त पूजने आया है॥ 2336॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भूतल पर जय-जय,होती निश्चय,पार्श्वनाथ जिनरायी की।
सब सविनय नमते, अर्चन करते, दुखहारी सुखदायी की॥ 2337॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्याः नित पूजे, गुणगण चिन्तें, फिर भी अँखियाँ प्यासी हैं।
साक्षात् दर्शकर, हृदय हर्ष धर, बनना शिवपुरवासी है॥ 2338॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्वामी तुम मेरे, मेटो फेरे, भव-दुख सहा न जाता है।
मैं तड़प रहा हूँ, बुला रहा हूँ, नाथ आप मम त्राता हैं॥ 2339॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मीठी प्रभु वाणी, जग कल्याणी, सुनकर भविजन सुख पाते।
जिनवचन न सुनते, वे भव भ्रमते, तरह-तरह के दुख पाते॥ 2340॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. अस्तित्वादिक गुण, प्रभुवर से सुन, स्व-पर तत्त्व का ज्ञान हुआ।
जिनशासन प्यारा, जग उजियारा, प्रभु को सविनय नमन किया॥ 2341॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरे प्राणेश्वर, हे हृदयेश्वर, पार्श्वनाथ प्रिय तीर्थङ्कर।
कोई ना अपना, लगता सपना, निःस्वारथ प्रभु क्षेमङ्कर॥ 2342॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वच से यदि बोलो, मिश्री घोलो, जिनवाणी माँ कहती है।
कुछ कटु न कहना, चुप ही रहना, निज को शान्ति मिलती है॥ 2343॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भुवनत्रय स्वामी, पार्श्व सु-नामी, मम अन्तर्मन में बसना।
मैं नित पूजूँगा, ध्यान धरूँगा, मेरे हो मेरे रहना॥ 2344॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वन्दन करने से, मन वच तन से, अपार शान्ति मिलती है।
मन का तम मिटता, ज्ञान प्रकटता, अन्तर ज्योति जलती है॥ 2345॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नेता त्रिभुवन के, मम जीवन में, प्रभो नन्त उपकार किया।
प्रभु ज्ञान सु-दाता, मार्ग प्रदाता, बिन मांगे सर्वस्व दिया॥ 2346॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. है कोऽत्र जगत में, मीत दु:ख में, सब ही सुख के साथी हैं।
प्रभु की छवि दर्शन, नियमित पूजन, अनुपम खुशियाँ लाती हैं॥ 2347॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भव तपन मिटा दो, शान्त बना दो, कर्म ताप में जलता हूँ।
मैं निज भावों से, परिणामों से, निज को ही क्यों छलता हूँ॥ 2348॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भगवान् हमारे, भक्त तिहारे, शरण आ गए भक्ति से।
कुछ भी ना चाहूँ, तुम्हें निहारूँ, नाता जोड़ूँ मुक्ती से॥ 2349॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तकदीर सँवारे, आये द्वारे, पारसप्रभु के गुण गाए।
मन से जो पूजे, शिवपथ सूझे, अविनश्वर वह सुख पाए॥ 2350॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रे चेतन चेतो, अब तो जागो, प्रभुवर तुम्हें जगाते हैं।
जो प्रभु की सुनते, सत्पथ चलते, उनको पार लगाते हैं॥ 2351॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. एकोऽपि अनेकं, हे जिनदेवं, अनन्त गुण को प्रकट किया।
करके पुरुषारथ, धर परमारथ, शुद्धातम अनुभवन किया॥ 2352॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मुक्ती तक भगवन्, साथ रहो मम, यही प्रार्थना करता हूँ।
प्रभु पार्श्व चरण में, अष्ट द्रव्य ले, अर्घ्य समर्पित करता हूँ॥ 42॥

ॐ ह्रीं श्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 43

स्तुति करने की पात्रता

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्याः
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः॥ 43॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

जो एकाग्रचित्त हो भविजन तुमको निरख रहे।
भक्ति करके रोम-रोम से पुलकित वदन रहे॥
तव निर्मल मुख अम्बुज का ही जिसने लक्ष्य रखा।
मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य बना विधिपूर्वक स्तोत्र रचा॥
मन-वच-तन से नाथ आपकी जो भवि स्तुति करें।
तव वन्दन से वन्द्य बने फिर शिवपद प्राप्त करें॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 43॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं।

भुवनत्रयसंसेव्यान्, वर्धमानान् महायतीन्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. **इत्यादिक कह ज्ञानी मौन हो जाते।**
क्योंकि आपके नन्त गुण ना गा पाते॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2353॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **मानथंभ दर्शन से मान गलित हुआ।**
भवि जीवों को सम्यग्दर्शन हो गया॥ पार्श्व०॥ 2354॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **समकित ज्ञान चरित की कलिया खिल गईं।**
वीतराग छवि से जब अँखियाँ मिल गईं॥ पार्श्व०॥ 2355॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **माणिक मोती नहीं प्रभु जी पास है।**
सम्यक् श्रद्धा मन में करती वास है॥ पार्श्व०॥ 2356॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **हितकारी जिनवाणी जन-मन भा रही।**
बारह सभा श्रवण करने को आ रही॥ पार्श्व०॥ 2357॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तट पाया भवसागर का प्रभु आपने।**
वरण करी है शिवाङ्गना विभु आपने॥ पार्श्व०॥ 2358॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **अधिकारी मुक्ती का सच्चा भक्त है।**
जो प्रभु के गुण में रहता अनुरक्त है॥ पार्श्व०॥ 2359॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. ज्योति जलाई पूर्णज्ञान की स्वयं में।
इसीलिए सुख अनन्त प्रकटा आप में॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2360॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. विधान करके मन अति पुलकित हो रहा।
प्रभु समीपता पा मन निर्मल हो रहा॥ पार्श्व०॥ 2361॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विधिपूर्वक जो पूजन करता भाव से।
भवदधि तिरता भक्त भक्ति की नाव से॥ पार्श्व०॥ 2362॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भगवज्जिनेन्द्र की पूजा से पूज्य हो।
मनवाञ्छित उसके सारे ही पूर्ण हो॥ पार्श्व०॥ 2363॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. जिनदर्शन से निजदर्शन हो जाता है।
जग को छोड़ निज में ही खो जाता है॥ पार्श्व०॥ 2364॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नेत्र कटोरे दोनों नाथ ले आया।
जिनछवि का दर्शन अमिय भरने लाया॥ पार्श्व०॥ 2365॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. इन्द्र नरेन्द्र नागपति पूजें आपको।
धन्य-धन्य ही मान रहे वे स्वयं को॥ पार्श्व०॥ 2366॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सांसारिक दुःखों से भगवन् दूर हैं।
परमारथ सुख से स्वामी भरपूर हैं॥ पार्श्व०॥ 2367॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. द्रोह न करना मात शारद कह रही।
गुरु उर में नित करुणा धार बह रही॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2368॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जल्ल-मल्ल से मलिन मुनी तन देखकर।
घृणा न करना समझाते हैं तीर्थकर॥ पार्श्व०॥ 2369॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. सत् लक्षण कह दिया द्रव्य का आपने।
अद्भुत है यह सूत्र भी परमागम में॥ पार्श्व०॥ 2370॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. पुण्य-पाप से नाथ हो गए जब परे।
स्वयं सिद्धिललना आकर प्रभु को वरे॥ पार्श्व०॥ 2371॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. लगन लगी मुझको भी निज शुद्धात्म की।
लौकिकता से दूर परम परमार्थ की॥ पार्श्व०॥ 2372॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. कर्णप्रिय लगते हैं प्रभुवर के वचन।
सुनकर लगता बन जाऊँ कब मैं भगवन्॥ पार्श्व०॥ 2373॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कञ्चन तजना सरल क्रोध तजना कठिन।
अनशन करना सहज आत्म अनुभव जटिल॥ पार्श्व०॥ 2374॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कञ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. चुम्बक सम प्रभु की छवि आकर्षित करे।
पूर्व बद्ध कर्मों को पल में क्षय करे॥ पार्श्व०॥ 2375॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. किए पूर्व में अज्ञ दशा में कर्म जो।
फल देते हैं उदयागत में दुःख वो॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2376॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तापनाशक प्रभो आपकी वन्दना।
भक्ति से हो कभी भक्त को बन्ध ना॥ पार्श्व०॥ 2377॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. अङ्ग अष्ट झुक गए आपके चरण में।
इस बालक को नाथ लीजिए शरण में॥ पार्श्व०॥ 2378॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भामण्डल की आभा अति मनहार है।
भव्यों को दिखते निज के भव सात हैं॥ पार्श्व०॥ 2379॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. खगाः सिंह सर्पादिक वचन सुनते हैं।
प्रभु-वाणी सुन सम्यग्दर्शन पाते हैं॥ पार्श्व०॥ 2380॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वद् भक्ति से भव-भव के संकट टलते।
दुखियारे भी अव्याबाध सुख वरते॥ पार्श्व०॥ 2381॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बिम्ब दर्श से बद्ध कर्म भी नष्ट हो।
प्रभु प्रत्यक्ष दरश से शिवपद प्राप्त हो॥ पार्श्व०॥ 2382॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. बन्धु हो निस्वार्थ आप भवतारक हो।
अनुपम सुखकारक प्रभो दुखवारक हो॥ पार्श्व०॥ 2383॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्वाञ्छक भावों से जो पूजा करे।
निश्चित कर्म नाशकर मोक्षरमा वरें॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2384॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मगन रहूँ मैं सदा प्रभु के भजन में।
सारी चिन्ता छोड़ दूँ आराधन में॥ पार्श्व०॥ 2385॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लघु अबोध बालक प्रभु जी अरजी करे।
सर्व दोष क्षयकर गुण सम्पत्ति वरे॥ पार्श्व०॥ 2386॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुख-मुद्रा लखकर प्रभु की शान्ति मिले।
बुझी हुई अन्तर समकित ज्योति जले॥ पार्श्व०॥ 2387॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. खाली हाथ न कोई दर से जाता है।
वाञ्छित फल को भक्त निश्चित पाता है ॥ पार्श्व०॥ 2388॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चरणाम्बुज का ध्यान सुख का कारण है।
दुख का हो जाता स्वयमेव वारण है॥ पार्श्व०॥ 2389॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जन्म-मरण का चक्र अनादि से चला।
भ्रमण मिटाने की प्रभु से मिलती कला॥ पार्श्व०॥ 2390॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. बड़े-बड़े विद्वान् चरण में आ रहे।
गुण समूह लयबद्ध आपके गा रहे॥ पार्श्व०॥ 2391॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. बद्ध कर्म अज्ञानदशा के नाश हो।
जिनमूरत दर्शक प्रभु का जो दास हो॥ पार्श्व०॥ 2392॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लक्ष्य बनाया जिसने भी ध्रुवधाम का।
उसने पद पाया अर्हत् भगवान का॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2393॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लक्ष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्याः जिनवर शरण आपकी आ गए।
समवसरण में आकर जिनपद पा गए॥ पार्श्व०॥ 2394॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. येन-केन भवदधि का तीर पाना है।
कायरपन तज मुझको वीर बनना है॥ पार्श्व०॥ 2395॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. सन्तानादिक राग बढ़ाने वाले हैं।
प्रभुवर ही भव पार कराने वाले हैं॥ पार्श्व०॥ 2396॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. स्तवन आपका भक्त को सुख दे रहा।
ऐसा लगता दुःख नन्त क्षय हो रहा॥ पार्श्व०॥ 2397॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. शिवं सुन्दरं नाथ मम रक्षा करिए।
चरण-शरण में आया सब बाधा हरिए॥ पार्श्व०॥ 2398॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तन से पूजन और वचन से गुण गाऊँ।
मन सुस्थिर करके मैं जिनवर को ध्याऊँ॥ पार्श्व०॥ 2399॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वश में करके मन इन्द्रिय को शिव गए।
नाथ आपके सुमरन से दुख मिट गए॥ पार्श्व०॥ 2400॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विभाव परिणतियाँ सबको दुख दे रहीं।
स्वभाव परिणति बिना कहीं सुख है नहीं॥ पार्श्व०॥ 2401॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. भोग विलास विनश्वर बन्ध कारक है।
भक्ति विधान हितङ्कर पापनाशक है॥
पार्श्वप्रभु की महिमा अपरम्पार है।
श्री चरणों में वन्दन बारम्बार है॥ 2402॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रणनीति में कुशल प्रभो जयवन्त हैं।
दुष्कर्मों को जीत हुए शिवकन्त हैं॥ पार्श्व०॥ 2403॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. चन्दन से भी शीतल हैं जिन के वचन।
इसीलिए मैं गाता हूँ प्रभु के भजन॥ पार्श्व०॥ 2404॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जयन्तु जिनशासन सबका हितकार है।
भटके अटके को यह तारणहार है॥ पार्श्व०॥ 2405॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तिलक समान बसे प्रभु जी लोकाग्र में।
अतः त्रिभुवनतिलक कहाते विश्व में॥ पार्श्व०॥ 2406॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भव्य जीव ही आप सम हो पाते हैं।
भगवन् होकर नहीं जगत में आते हैं॥ पार्श्व०॥ 2407॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भव्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. धन्याः हैं वे जीव गए जो मोक्ष में।
प्रभु कहें धिक्कार रुले जो मोह में॥ पार्श्व०॥ 2408॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

ध्यानमग्न हो भविजन जो निरखे तुम्हें।
भक्ति करके रोम-रोम पुलकित रहें॥
लक्ष्य बना मुक्ती का स्तोत्र रचा महा।
नमूँ प्रभु को सविनय अर्घ्य चढ़ा रहा॥ 43॥

ॐ ह्रीं श्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 44

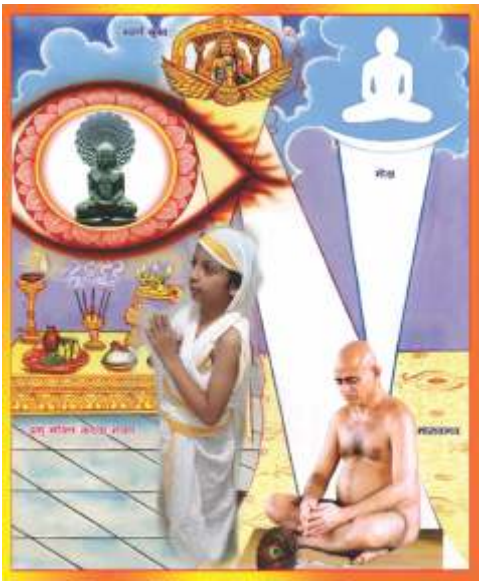

भक्ति का फल मुक्ति

जननयन 'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-सम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥44॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

भव्य कुमुद को विकसित करते जिनवर चन्द्र समान।
नाथ आपके भक्त प्राप्त करते हैं स्वर्ग महान॥
स्वर्ग सुखों को भोग-भोग कर मनुज गति पाते।
चतुर्गति का भ्रमण नाशकर पंचमगति पाते॥
ज्ञान चक्षु को विकसित कर दो हे प्रभु पारसनाथ।
स्वर्णभद्र गिरि कूट शिखर पर रखूँ चरण में माथ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥44॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदिमहावीरवड्ढमाण-बुद्धिरिसीणं।

वर्धमानान् महावीरान् , महतो बुद्धिसागरान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 44॥

ॐ ह्रीं अर्हं भगवन्महावीर-वर्धमान-बुद्धि-ऋषिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **जहाँ-जहाँ प्रभु विहार करते, धरती पुलकित हो जाती।**
एक बार उर धरा पृष्ठ पर, आओ यह मम मति गाती॥ 2409॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नव केवललब्धि के स्वामी, किया आपने मोक्ष गमन।**
निज उपयोग हटाकर पर से, करूँ नाथ त्रय योग नमन॥ 2410॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **नरतन सफल हुआ प्रभुवर का,जब सिद्धि को प्राप्त किया।**
पार्श्वप्रभु ने शाश्वत सुख पा, मुक्ती का शुभ सूत्र दिया॥ 2411॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **यश ख्याति पाने के कारण, कठिन-कठिनतम कार्य किए।**
किन्तु मुक्ति पाने को मैंने, कुछ भी ना पुरुषार्थ किए॥ 2412॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **नम्रभूत सुर चँवर ढुराते, हौले-हौले ढुरते हैं।**
मानो सुमेरु के द्वय तट से, उज्ज्वल झरने झरते हैं॥ 2413॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **कुमति विनाशक सुमति प्रदायक, नाथ आपके दिव्यवचन।**
इसीलिए कर जोड़ भक्तगण, सुनते हैं कर नम्र नयन॥ 2414॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **मुदित मुखी होकर रहना अब, म्लान मुखी हो क्यों रहना।**
पार्श्वनाथ सम प्रभु को पाकर, भावों से पूजन करना॥ 2415॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दयानिधि करुणासिन्धु के, दर्शन का सौभाग्य मिला।
भव-भव का सुकृत[1] संचय कर, लगा आज दुर्भाग्य टला॥ 2416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. चन्द्र चाँदनी फीकी पड़ती, नाथ आपकी छवि आगे।
देख आपकी मनोज्ञ मूरत, घोर मोह मिथ्यात्व भगे॥ 2417॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. द्रव्य दिव्य मैं ला न सका प्रभु, श्रद्धा का शुभ द्रव्य लिया।
चरण चढ़ाने आया हूँ मैं, पुलकित है मम आज जिया॥ 2418॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. प्रशान्त परिणामों से भविजन, कर्म निर्जरा करते हैं।
जो निस्वार्थ भक्ति करते हैं, उनके संकट टलते हैं॥ 2419॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भास्वत है जिनबिम्ब आपका, अपलक उसे निहार सकूँ।
दिव्य ज्योति दो इन नैनों से, निजानुभव रस स्वाद चखूँ॥ 2420॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. स्वर्ग सुखों की नहीं कामना, मात्र मोक्ष सुख को चाहूँ।
इसीलिए प्रभु उपदेशित ही, मोक्षपन्थ को अपनाऊँ॥ 2421॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नराः सर्व इन्द्रिय विषयों को, तजकर प्रभु को पूज रहे।
मधुर-मधुर ध्वनियों से प्रातः, जिनमन्दिर गृह गूँज रहे॥ 2422॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'राः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त हो, जिनवर के आराधन से।
भक्ति और ध्यान से क्रमशः, स्वर्ग मोक्ष हो नर भव से॥ 2423॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. गति-आगति से रहित हुए प्रभो, पंचम मोक्ष गति पाई।
यह भव्यात्मा नाथ आप सम, मुक्ती पाने अकुलाई॥ 2424॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. पुण्य

17. सम्यक् रत्नत्रय पाकर प्रभु, मोक्षमहल तक गमन किया।
दिव्य-कान्ति लखकर भव्यों ने, तीन योग से नमन किया॥ 2425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पवित्र भावों से पामर भी, परमात्मा हो जाता है।
क्रूर भावना से बहिरात्मा, भव-वन में खो जाता है॥ 2426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दो हाथों को जोड़ भक्त जो, श्रद्धा धरकर नमन करे।
इक दिन वह भी भगवन् बनकर, मोक्षपुरी में गमन करे॥ 2427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुक्ती मुक्ती को देने वाली, प्रभु की भक्ति मानी है।
देव बने व्यवहार भक्ति से, निश्चय शिवपददानी हैं॥ 2428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भुक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. नत्वा तन-मन और वचन से, तीनों कर्म मिटाना है।
द्रव्य भाव औ नोकर्मों से, अब छुटकारा पाना है॥ 2429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेज आपका लखकर सूरज, अस्ताचल की ओर चला।
जिसने भी श्रद्धा से पूजा, उसका सारा मोह टला॥ 2430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विकार परिणतियों से अब तक, दूर नहीं हो पाया हूँ।
मोह चँदरिया ओढ़ सो रहा, जागृत होने आया हूँ॥ 2431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गलती की जो पूर्व काल में, बार-बार पछताता हूँ।
बद्ध कर्म को नाथ छुड़ाने, तव मूरत को ध्याता हूँ॥ 2432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लिप्त आतमा कर्म मैल से, शुद्ध कराने आया हूँ।
भक्ति के पावन सरवर में, नाथ नहाने आया हूँ॥ 2433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तम मिट जाता जब जिनछवि से, रवि से फिर क्या काम रहा।
तीव्र लगन अब लगी भक्त को, पाना है शिवधाम महा॥ 2434॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. महत्त्व है अपने भावों का, मात्र द्रव्य का मोल नहीं।
जन-जन के वच की ना महिमा, जिनवाणी अनमोल रही॥ 2435॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. लहराकर यह धर्मपताका, जग को सन्देशा देती।
जिनशासन की महिमा समझो, जिससे आत्म शान्ति मिलती॥ 2436॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. निज को जिनने निरखा उनको, स्वात्म प्रभु का दरश हुआ।
मोह कर्म भी शान्त हुआ औ, सब विकार का ध्वन्स हुआ॥ 2437॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. चरम शरीरी जिन को वन्दन, परम शान्त रस पाने को।
आया हूँ इक आशा लेकर, भव के फन्द मिटाने को॥ 2438॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. याद रहे बस छवि आपकी, और न कुछ भी याद रहे।
अन्त समय में मेरे मुख पर, प्रभु नाम का जाप रहे॥ 2439॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अनन्त गुणधर पार्श्वनाथ की, महिमा अज्ञ अगोचर है।
जुगनू सम हैं नाथ भक्त हम, आप अपूर्व दिवाकर हैं॥ 2440॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. चिच्चैतन्य चमत्कारी श्री, चिन्तामणि प्रभु की जय हो।
जो चिन्ते तव शुद्ध गुणों को, पलभर में ही निर्भय हो॥ 2441॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिमिरान्तक है नाम तिहारा कब मेरा तम क्षय होगा।
जिनकी महिमा इतनी अद्भुत, जिनदर्शन अनुपम होगा॥ 2442॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मोर देख लम्बे विषधर के, बन्धन ढीले पड़ जाते।
देख आपको भक्त जनों के, कर्म बन्ध ढीले होते॥ 2443॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. प्रत्यक्षं जिनदेव दर्शनं, शाश्वत सुख का कारण है।
प्रभु के आत्मिक गुण का चिन्तन, करता कष्ट निवारण है॥ 2444॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रण करके कल्याण सु-मन्दिर, पाठ नित्य जो करता है।
उसके आगत पाप कर्म का, उदय सहज टल जाता है॥ 2445॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. परम पवित्र अर्चना प्रभु की, महिमा शब्द अगोचर है।
पार्श्वप्रभु का ध्यान धरे जो, पाता ज्ञान सरोवर है॥ 2446॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पद्य रूप इस स्तोत्र सरित्[1] में, प्रमुदित होकर न्हवन करे।
निश्चित ही वह मध्यलोक से, सिद्धलोक में गमन करे॥ 2447॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अन्तेवासिन् बनकर भगवन्, द्वय चरणों के निकट रहूँ।
यही प्रार्थना है बस अब मैं, भव-वन में ना भ्रमण करूँ॥ 2448॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

भव्य कुमुद को विकसित करके, स्वर्ग मोक्ष के दाता हैं।
आप चरण की शरण प्राप्त कर, पाते भविजन साता हैं॥
ऐसे पार्श्वनाथ जिनवर के, कुमुदचन्द्र सम भक्त महान।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ अर्चना, अक्षय सुख देना भगवान॥ 44॥

ॐ ह्रीं श्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. नदी